IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

भारतीय सामज में नारी की स्थिति

देवी राम[1] and डॉ. अमीत कुमार[2]
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग[1]
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग[2]
ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, राजस्थान

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय समाज में नारी की स्थिति को को लेकर दर्शाया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय नारी की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव आया। यह घर की चारदिवारी से बाहर निकलकर देष के बहुआयायामी विकास में अमुल्य योगदान देने लगी। आज हमारे देश की नारियां राजनितिक सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक सभी क्षेत्रो में आगे बढ़ रही है। सादियों से शोषित एवं पददलित नारी पुरुष प्रधान समाज के प्रभाव से मुक्त होकर आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक दासता से निकलकर स्वछच्छंद जीवन का विकास करने की सुविधाएं प्राप्त कर रही है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न समाजों संस्कृतियों में नारीवादी अवधारणा का विकास किस प्रकार हुआ एवं कैसे लोकप्रिय हुयी। समाजषास्त्रीयों ने नारीवाद की अवधारणा का विश्लेषण जिन नारीवादी सिद्धान्तों के माध्यम से किया है तथा नारीवाद के माध्यम से महिलायें स्वयं का सशक्तीकरण करने में कहां तक सफल हुई हैं, ऐसे कई विषयों पर विचार किया गया है।

शब्द कुंजी- भारीत्य समाज, राजनितिक सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक, नारीवाद इत्यादि।

संदर्भ- ग्रंथ

1. अग्रवाल, चन्द्रमोहन, भारतीय नारी: विविध आयाम, पृ-सं-35, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
2. अग्रवाल, प्रेमनारायण, सम्पादन, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ. सं. 23-24, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिपो, नई दिल्ली।
3. डॉ. मधु देवी, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, शोध, समीक्षा और मूल्यांकन, पृ. सं. 74।
4. शर्मा, गजानन, प्राचीन साहित्य में नारी, पृ. सं. 21, रचना प्रकाशन, 45-ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद
5. शर्मा, गजानन, प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, पृ. सं. 42-43, रचना प्रकाशन, 45-ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद
6. आशारानी व्होरा - औरत कल, आज और कल कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2006
7. डॉ० उर्मिला प्रकाश मिश्र - प्राचीन भारत में नारी, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2002
8. एम० के० गाँधी- वीमेन एंड सोशल इन जस्टिस, नवजीवन पब्लिसिंग हाउस,अहमदाबाद, 1954
9. डॉ० कीर्ति केसर - स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष्य अध्ययन, नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली।

प्रो० कसुमलता केडिया, प्रो० रामेश्वर प्रसाद मिश्र - स्त्रीत्व, धारणाएं एवं यथार्थ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2004.

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568